

पानी और जमीन की बिगडती परिस्थितियों में अंगूर उत्पादन के लिए मूलकांड का इस्तेमाल अनिवार्य है। विभिन्न स्थिति के अनुसार विभिन्न मूलकांड की शिफारिश की गई है।

डॉंगरिज - पानी की कमी और सांद्र की अधिकता

रामसे - अधिक सांद्रता

इसके अलावा कुछ मूलकांड पर (1103P, SO4, 140RU और Freedom) इस संस्थान में परिक्षण चल रहा है।

## VI. मूलकांड लगाना और कलम बांधना (Planting and grafting)

- मूलकांड जमीन में फरवरी माह में लगाने चाहिए उस समय उचित तापमान होता है और पौधे का विकास ठीक तरह से होता है। पौधा लगाने के ठिक 2 - 3 दिन पहले जमीन में पानी देना आवश्यक होता है। पौधा लगाने समय 1' x 1' x 1' का गहरा गड्ढा लेने से मूलकांड की जड़ें आसानी से जमीन में फैलती हैं। पौधों को दीमक से बचाने के लिए मिट्टी में क्लोरपायरीफॉस नामक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
- फरवरी मास में लगाए गये पौधों में जड़ों के समुचित विकास के लिए उन्हें जून तक बढने दिया जाता है।
- पौधे रोपने के 50 दिन बाद 3 एकसमान बढनेवाली नयी शाखाएँ बाँस के सहारे बांधे जाते हैं।
- सितंबर माह में मूलकांड पर कलम बांधी जाती है। इसी माह में कलम सफल होने के लिए आवश्यक तापमान (30-35°C) और आर्द्रता (>80%) होती है। कलम करने से पहले कलम काडी को 0.1% कार्बेन्डाज़िम के घोल में कम से कम एक घंटा रखने से कुछ बीमारीयों से छुटकारा मिलता है।

- कलम काडी पर 2" आकार का तिरछा काट लेने से काडी का गुदा निकलता है, जिससे कलम के पच्छात कलम काडी और मूलकांड का संयोजन ठीक तरह से होता है।
- कलम जोड बांधते समय 200 मायक्रॉन साईज की प्लास्टिक की टेप इस्तेमाल की जाती है ताकि जोड में पानी और हवा न पहुँच सके।
- कलम करने के 7-10 दिन के बाद कलम काडी अंकुरित होना आरम्भ होती है तथा कलम जोड 45 दिन में पूरा होता है। इस दौरान प्लास्टिक की टेप ढीली करके फिर बांधने से गर्डलिंग जैसी विकृति होने से बचा जा सकता है।

तकनिकी फोल्डर संख्या - १०

मार्च, २००७

मूल्य : रुपये दस केवल

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

निदेशक

**राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र**

डाक पेटी संख्या 3, मांजरी फार्म डाकघर

सोलापूर रोड, पुणे - 412 307

Phone : 020-26914245 • Fax : 020-26914246

E-mail : nrcgrape.mah@nic.in

Printed at : Flamingo Business Systems, Tel. : 24214636. Email : flaminbs@vsnl.com



## अंगूर के बाग की स्थापना एक मार्गदर्शिका



डॉ. आर. जी. सोमकुंवर  
डॉ. जे. सतिशा

राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे



## I. स्थल का चयन (Selection of site)

- अंगूर मुख्यतः शितोष्ण क्षेत्रों में उगाया जाता है, लेकिन इस फसल की कुछ तकनीकियों (cultural operation) में आमुलाग्र परिवर्तन करके इसी फसल को उपोष्णीय (Sub-tropical) वातावरण में सफलता पूर्वक उगाया जा रहा है। परंतु, वातावरण में जादा नमी इस फसल के लिए हानिकारक होती है।
- हलकी से मध्यम गठन की मिट्टी टहनी के विकास को प्रोन्नत करती है। लेकिन, प्रतिकूल जमीन में भी मूलकांड के प्रयोग से लगाए फसल पर मिट्टी के दुष्प्रभाव का असर नहीं होता।
- अंगूर की फसल लगाने के पहले बगीचे में पर्याप्त मात्रा में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है। उपोष्णीय वातावरण में एक एकर क्षेत्र में 18,000 से 20,000 लिटर पानी की मात्रा गर्मी के दिनों में होना जरूरी है।
- निम्नस्तरीय क्षेत्र में जहाँ समुचित जलनिकास की व्यवस्था नहीं है, ऐसी जगह का चयन न करें।

## II. जमीन की तैयारी और रूपरेखा तैयार करना (Land preparation and layout design)

- खेत में निरंतर होनेवाले दूब घास तथा नट घास नामक खतपतवार आदि के नियंत्रण के लिए ग्लायफोसेट की 10 मिली प्रति लिटर मात्रा में छिड़काव करना जरूरी है।
- खेत में पहुँचने के मार्ग और स्थान के अनुसार रूपरेखा तैयार करना जरूरी है। साधारणतः कतार उत्तर दक्षिण की दिशा में Y तथा T ट्रेलिज में चयन किया जाता है जिसमें कॉर्डन की भी दिशा एक होती है, लेकिन, पंडाल

(मंडप) पध्दति में पूरब-पश्चिम दिशा का चुनाव किया जाता है।

- अंगूर की टहनी लगाने से पहले अंगूर की किस्म, मिट्टी का प्रकार और जलवायु संबंधी जानकारी के अनुसार ही निर्णय लिया जाना चाहिए।
- बगीचे में कार्य की आसानी के लिए कतार की लंबाई 200 फूट से जादा न हो।
- पौधों को लगाने के लिए कम से कम दो फूट गहरा गड्ढा खोदना चाहिए, जिससे जड़ों का विकास ठीक तरह से होता है। साथ ही जमीन पथरीली या मुरुम हो तो 4 फूट तक रिपींग करना अनिवार्य होता है।
- गड्ढा खोदने के बाद उसमें खाद (सुपर फॉस्फेट) और गोबर डालकर मिट्टी से भर दिया जाता है।

## III. ट्रेलिसेस लगाना (Erection of trellises)

- अंगूर की लता को चढाने के लिए किस ट्रेलिसेस पध्दति चयन यह अंगूर की किस्म, उस स्थान का वातावरण, मशीनों के प्रयोग, आदि पर निर्भर करता है। 'Y' अथवा 'T' पध्दति नमीयुक्त वातावरण तथा मंडप पध्दति सूखे वातावरण के लिए उपयुक्त रहता है। मंडप पध्दति में अधिक आर्द्रता संचित होने के कारण रोगों का प्रभाव ज्यादा होता है। इसके अलावा कार्य करने में भी बहुतसी कठिनाईयाँ आती हैं। फ्लॉट रूफ गेबल अथवा विस्तारित 'Y' पध्दति में इन कठिनाईयाँ से बचा जा सकता है।
- अंगूर की मदिरा किस्मों की वृद्धि धीमी होती है इसके लिए 'निफीन' तथा 'T' पध्दति का इस्तेमाल करना चाहिए।

## IV. सिंचाई पध्दति स्थापित करना (Installation of drip irrigation)

- सिंचाई करते समय पानी के एकसमान बँटवारा (खडा और आडा) होने की सुविधा सिंचाई पध्दति में होना जरूरी है। कम दबाव के इमीटर्स के द्वारा जादा समय तक पानी छोडना जमिन के लिए लाभदायक होता है।
- एकसमान पानी वितरण के लिए ड्रिप लाइन को जगह जगह पर बांध देना चाहिए।
- पानी के संचय के साथ व्हेंच्युरी और सॅन्ड फिल्टर जोडने की सुविधा होना जरूरी है जिससे समय समय पर खाद सिंचाई द्वारा दिया जा सकता है।
- समय समय पर ड्रिप लाइन से पानी बहाने से जमा हुई गंदगी हट जाती है और हर पौधे को एकसमान दबाव से पानी मिलता है।

## V. किस्म और मूलकांड का चयन (Selection of variety and rootstock)

प्रयोजन के अनुसार, बाजार की जरूरत तथा अंगूर लगाये जानेवाले वातावरण को ध्यान में रखते हुए किस्म और मूलकांड का चयन करना जरूरी है। नीचे परिस्थिति के अनुसार चयन प्रक्रिया निम्न है।

- खाने वाले अंगूर** - थॉमसन सीडलैस, तास-ए-गणेश, मानीक चमन, सोनाका, फ्लेम सीडलैस तथा शरद सीडलैस।
- मनुका** - थॉमसन सीडलैस, तास-ए-गणेश, मोनुक्का, आदि
- मदिरा निर्माण** - कॅबरनेट सॉव्हिग्रॉन, मर्लो, झिनफंडेल, आदि